Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

डॉ. अम्बेडकर आधारित संस्कृत ग्रंथ 'भीमाम्बेडकरशतकम्' का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. दिलीप कुमार
पोस्ट डॉक्टरल फेलो ,डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र ,नई दिल्ली, भारत

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number : 46-52

Publication Issue :
January-February-2022

Article History
Accepted : 01 Feb 2022
Published : 10 Feb 2022

शोध सारांशिका - 'डॉ. अम्बेडकर आधारित संस्कृत ग्रंथ 'भीमाम्बेडकरशतकम्' का समीक्षात्मक अध्ययन' है। शोध शीर्षक की संक्षिप्त व्याख्या निम्न है। **'सहितयोः शब्दार्थयोः भावः साहित्यम्।'** अर्थात् सहित शब्द तथा अर्थ का भाव। वाचस्पत्यम् शब्दकोश में भाव अर्थ में 'ष्यञ्' प्रत्यय करके 'सहितस्य भावः साहित्यं' निर्वचन दिया गया है। साहित्य शब्द का प्रयोग 7-8 वीं शताब्दी से मिलता है। इससे पूर्व साहित्य शब्द के लिए काव्य शब्द का प्रयोग होता था। संस्कृत में जब एक ही अर्थ में साहित्य और काव्य शब्द का प्रयोग होने लगा, तो धीरे-2 काव्य शब्द का अर्थ संकुचित होने लगा। आज काव्य का अर्थ केवल कविता है और साहित्य शब्द को व्यापक अर्थ में लिया जाता है। साहित्य का तात्पर्य अब कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा अर्थात् गद्य और पद्य की सभी विधाओं से है। आचार्य विश्वनाथ ने 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहकर रसयुक्त वाक्य को काव्य कहा है। आचार्य वामन ने 'रीतिरात्माकाव्यस्य' कहकर रीति को काव्य की आत्मा माना है।

प्रमुख शब्द – डॉ. अम्बेडकर, आचार्य विश्वनाथ, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, पद्य, गद्य।

संस्कृत-साहित्य- संस्कृत साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है- वैदिक एवं लोकिक। वैदिक साहित्य में चार वेद एवं उनकी संहिताओं ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषदों एवं वेदांग को शामिल किया गया है। लौकिक साहित्य में गद्य, पद्य, चम्पू, कथा, स्तोत्र, नाटक, भाष्य, टीका इत्यादि आते हैं। लौकिक साहित्य भी प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य के भेद से दो प्रकार का है।

डॉ. अम्बेडकर- भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के महू (युद्ध के सेना मुख्यालय) में 14 अप्रैल, 1891 को हुआ था। उनके पिता का नाम रामजीराव सकपाल एवं माता का नाम भीमाबाई था। अम्बेडकर के पिता की चौदहें सन्तानें थीं और डॉ. अम्बेडकर उनमें सबसे छोटे थे।

भारतीय संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर के महान् जीवनचरित, महिलाओं एवं शोषित समाज के लिए किए गए कार्यों से कोई अनभिज्ञ नहीं है। अम्बेडकर मुख्य रूप से बुद्ध, ज्योतिराव फूले, कबीर, रविदास और चोखामेला जैसे सन्यासी व संतों से बहुत प्रभावित थे।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

डॉ. अम्बेडकर ने तथागत बुद्ध के जीवन से प्रभावित होकर यह विचार ग्रहण किया कि मनुष्य न केवल अपने शाही जन्म के कारण बल्कि अपने अच्छे कर्मों से भी महान् बनकर समाज को बेहतर रूप दे सकता है।

सन् 1990 में मरणोपरान्त डॉ. अम्बेडकर को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया। 6 दिसम्बर 1956 को उनका देहान्त हुआ।

संस्कृत में लिखित अम्बेडकर-साहित्य

काव्यसाहित्य - भीमशतकम्, अम्बेडकरदर्शनम्, भीमायनम्, भीमरावाम्बेडकरशतकम्।

गद्यसाहित्य - डॉ. बाबासाहेब–आंबेडकराः (संस्कृतपुष्पमाला), नवभारत–निर्माता डॉ. बाबासाहेब–आम्बेडकरः (राजकीय–महापुरुषाः), राष्ट्रनायकः डॉ. अम्बेडकरः, भारतरत्नमम्बेदकरः संस्कृतभाषा च (बुद्धधम्म, बुद्धिवाद व आंबेडकर), अभिनवशुकसारिकायां डॉ. अम्बेडकरवर्णनम्।

सम्भाषण-सन्देश में प्रकाशित लेख - अम्बेडकरस्य संस्कृताभिमानः, अम्बेडकरः संस्कृतेन भाषते स्म, भारतीय संविधाने सन्ति रामकृष्णादयः अपि।

संस्कृत में लिखित उपरोक्त डॉ. अम्बेडकर–साहित्य की रचना–परम्परा का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।

भीमाम्बेडकरशतकम् - भीमाम्बेडकरशतक की रचना सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षु शास्त्री ने 1990 ई. वर्ष में की थी। संपादन कार्य डॉ. प्रियसेन सिंह ने किया है। इस काव्य में कुल 101 श्लोक हैं। प्रो. शास्त्री इस ग्रन्थ की पुष्पिका में वह तिथि भी दर्ज कर दी है, जिस तिथि को इस ग्रन्थ का लेखन समाप्त हुआ था और वह तिथि थी ईसवीय 21 नवम्बर 1990(21/11/1990)। प्रो. शास्त्री ने इस ग्रन्थ को बड़ी सरल संस्कृत में लिखा है, ताकि सामान्य संस्कृत से परिचित व्यक्ति भी इसका रसास्वादन कर सके। इसे प्राचीन लिपिकर परंपरा में लिखा गया है, जहाँ अनुनासिक वर्णों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया है। जैसे गङ्गा के स्थान पर गंगा, चञ्चल के स्थान पर चंचल, चाण्डाल के स्थान पर चांडाल, परम्परा के स्थान पर परंपरा आदि। स्थान–2 पर संयुक्त वर्णों को तोड़कर रखा गया है यथा सम्यक्तया के स्थान पर सम्यक्तया आदि। इस प्रकार के प्रयोग के पीछे एक ही उद्देश्य है और वह यह कि संस्कृत को यथा संभव सरल बना कर प्रस्तुत किया जा सके ताकि सामान्यजन भी इसे पढ़ कर समझ सकें। यह ग्रन्थ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नवदेहली से 2012 में प्रकाशित हुआ है।

प्रो. शास्त्री ने डॉ. अम्बेडकर के अवदानों के अभिनन्दन में यह खंडकाव्य लिखा है। यही कारण ही कि बाबा साहेब के जीवन और कृतित्व के कुछ खास बिन्दुओं पर ही प्रकाश डाला गया है। प्रो. शास्त्री की दृष्टि में बाबा साहेब का त्रिरत्नशरण (बुद्ध, धम्म और संघ) ग्रहण सबसे महत्वपूर्ण घटना है, इसीलिये काव्य के अन्त में बाबा साहेब का जयकारा करते हुए लिखते हैं[1]–

जय भीम महाभाग त्रिरत्नशरणंगत।
जयां स्तु सततं तेषां ये भवन्ति तवानंगाः॥

लेखक भीमाम्बेडकरशतकम् के प्रारंभ में लिखते हैं कि –

सरस्यां पंकजं प्राप्त गुंजन्ति भ्रमरा भृशम्।
जगत्यां सुजनं लब्ध्वा हर्ष तन्वन्ति मानवाः॥

तालाब में कमल को पाकर भौंरे बहुत गुंजन करते हैं। दुनियां में भले लोगों को पाकर (उत्तम कोटि के) मनुष्य हर्ष का विस्तार करते हैं। भीमाम्बेडकरशतकम् की तरह ही बाबा साहब पर संस्कृत भाषा में अनेक ग्रंथ लिखे गए हैं–

भीमशतकम् कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी से सन् 1991 में प्रकाशित खण्डकाव्य है। इस शतक काव्य में कुल 101 श्लोक हैं। इस ग्रन्थ का प्राक्कथन आचार्य सत्यव्रत शास्त्री ने तथा इसकी भूमिका डॉ. मोहनचन्द ने लिखी

[1] भीमाम्बेडकरशतकम्, प्रस्तावना, पृ. 5–9

है। भीमशतकम् कृति डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन पर आधारित है। भारतीय संविधान के निर्माता तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के पक्षधर डॉ. अम्बेडकर ने अपना सम्पूर्ण जीवन दलित समाज के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। डॉ. अम्बेडकर का जन्म अछूत मानी जाने वाली 'महार' जाति में हुआ था इस कारण डॉ. अम्बेडकर को बचपन से ही सामाजिक तिरस्कार, अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव व घृणा के कटु अनुभवों का सामना करना पड़ा जिससे वे बहुत दुःखी हुए इस विचार का वेवेचन श्रीकृष्ण सेमवाल ने इस प्रकार किया है–

शालायां शिक्षकाणांच छात्राणामपि प्रत्यहम्।

व्यवहारं कुत्सितं दृष्ट्वा त्रस्तो बालो मुहुर्मुहुः॥[2]

समाज में फैली अस्पृश्यता रूपी बुराई को देखकर कबि श्रीकृष्ण सेमवाल का हृदय अत्यन्त दुःखी है। वे चाहते हैं कि समस्त मानव मात्र को समान रूप से मानने वाले भीमराव की चिन्तनधारा संसार में प्राणिमात्र के सुख के लिए बहती रहे–

दलितजनहिताय सर्वसौख्यं विहाय,

विकटपथविशेषस्स्वीकृतो येन भव्यः।

सकलजन समानस्चिन्तनस्यास्यधारा,

प्रवहतु भुवनेऽस्मिन् सर्वदैव सुखाय॥[3]

'भीमशतकम्' खण्ड काव्य समग्र मानव जाति की समानता का समर्थन करने वाला काव्य है। कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने 'भीमशतकम्' में भारतीय समाज के निर्माता एवं महान राजनीतिज्ञ डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा दलित समाज के लोगों के उत्थान के लिए किए गए प्रयासों का वर्णन किया है। 'भीमायन महाकाव्य' का प्रणयन प्रा. प्रभाशंकर जोशी के द्वारा किया गया है। यह महाकाव्य प्रथमतया पूणे नगर से प्रकाशित शारदा पत्रिका के शारदा गौरव ग्रन्थमाला के 91वें अंक के रूप में मुद्रित हुआ। सन् 2009-10 में प्रकाशित यह महाकाव्य विद्वानों में अत्यन्त चर्चित रहा। 21 सर्गों में सुगुम्फित 1600 श्लोकों में निबद्ध इस महाकाव्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन-चरित उपवर्णित किया गया है। इस महाकाव्य स्वरूप ग्रन्थ के आरम्भ में कवि ने 'महापुरुष-भीमाय विनयेन समर्पये' इस शीर्षक के द्वारा समर्पण तथा इसके बाद प्रस्तावना प्रस्तुत की। महाकाव्य में विवर्णित व्यक्तियों, स्थानों तथा वस्तुओं आदि का वर्णन कवि ने पाद-टिप्पणियों में दिया है, यह इस काव्य की एक विशेषता है। कवि ने इस महाकाव्य में बचपन से महापरिनिर्वाण तक डॉ. अम्बेडकर के सम्पूर्ण जीवन का वर्णन अत्यन्त मार्मिकता और ईमानदारी से किया है।

आधुनिक संस्कृत-गद्य साहित्य में डॉ. अम्बेडकर का वर्णन- डॉ. बाबा-साहेबांबेडकराः नागपुर विद्यापीठ प्रकाशन के द्वारा सन् 1972 में संस्कृत-पुष्प-माला नामक ग्रन्थ बी.ए. प्रथम वर्ष के पाठयक्रम के लिए प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ में द्वितीय पाठ के रूप में 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराः' यह पाठ विलसित होता है। इस पाठ में डॉ. अम्बेडकर के जीवन तथा कार्यों को अतीव संक्षेप में प्रस्तुत किया गया। इस पाठ में वर्णन किया गया है कि डॉ. अम्बेडकर के बुद्धि-वैभव को देखकर तत्कालीन राष्ट्र के अग्रणी नेताओं द्वारा वे प्रथम विधि-मन्त्री के रूप में प्रतिष्ठापित किये गये तथा डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान का निर्माण किया तथा वे समाजोद्धारक के रूप में भी अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। दलितों के सभी दुःखों को जड़ सहित समाप्त करने की मति से उन्होंने अपने लाखों अनुयायियों के साथ नागपुर की पावन दीक्षा-भूमि पर बौद्धधर्म ग्रहण किया। यह विषय भी पाठ में अतीव संक्षेपतया वर्णित किया गया है।

नवभारत-निर्माता डॉ. बाबा-साहेबाम्बेडकरः - महाराष्ट्र के रामटेकस्थ-कवि-कुलगुरु-कालिदास-संस्क्रुत-विस्वविद्यालय के द्वारा सन् 2003-4 में केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मंत्रालय के सहयोग से संस्कृत-बाल-साहित्य के अन्तर्गततया

[2] भीमशतकम् श्लोक सं. 23

[3] भीमशतकम् श्लोक सं. 95

तृतीय–पुष्प के रूप में 'राजकीय–महापुरुषा:' यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बाबासाहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन–चरित के विषय में एक पाठ्यांश 'नवभारत–निर्माता डॉ. बाबासाहेबाम्बेडकर:' इस नाम से किया गया है। डॉ. नन्दा पुरी के द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन–चरित उपवर्णित किया गया है। इस ग्रन्थ में पाठ्यांशों के साथ–2 चित्रों के द्वारा भी अतीव सुन्दरतया डॉ. अम्बेडकर के जीवन को समझाने का प्रयास किया गया है।

राष्ट्रनायक: डॉ. अम्बेडकर:– बेंगलोर के संस्कृत भारती नामक संगठन द्वारा सन् 2007 में 'राष्ट्रनायक: डॉ. अम्बेडकर:' (राष्ट्र के नायक डॉ. अम्बेडकर) यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का मूल रूप में लेखन चन्द्रशेखर भण्डारी ने किया था तथा इसका संस्कृत–भाषा में अनुवाद सूर्यनारायण के. एन्. द्वारा किया गया है।

इस ग्रन्थ में प्रकाशक ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के राष्ट्र–नायकत्व को अत्यन्त स्पष्टता और सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के द्वारा एक ग्रन्थ 'संस्कृत–भारत की आत्मा तथा विवेक की वाणी' इस नाम से प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ के अन्तर्गततया 'भारत की राजभाषा पर अम्बेडकर के विचार' यह लेख प्रकाशित हुआ है।इस आलेख में संस्कृत ही भारत की राजभाषा होनी चाहिए, इस प्रकार का प्रस्ताव डॉ. अम्बेडकर ने संविधान सभा में रखा था। 10 सितम्बर 1949 को 'अखिल भारतीय हरिजन संघ' की कार्यकारिणी में भी यह प्रस्ताव पारित होना चाहिए, यह डॉ. अम्बेडकर का अभिमत था, किन्तु वहाँ वी.पी. मौर्य नामक दलित युवक ने इसका विरोध किया। बाद में इस संघ के द्वारा अपने विरोध के लिए खेद प्रकट किया गया। उसी खेद–प्रस्ताव को इस ग्रन्थ में 'अखिल भारतीय हरिजन संघ का अभिमत' इस शीर्षक के अन्तर्गत उल्लिखित किया गया।[4]

सन् 2003 में जून महीने में बेंगलोर से प्रकाशित संस्कृत भारती की पत्रिका सम्भाषण सन्देश में बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विषय में प्रकाशित लेख 'अम्बेडकर: संस्कृतेन भाषते स्म!' में भी लेखक चमू कृष्ण शास्त्री ने प्रमाणों के साथ इस विषय की पुष्टि की कि डॉ. अम्बेडकर संस्कृत को राजभाषा बनाना चाहते थे।

इस प्रकार इस शोध–कार्य के माध्यम से संस्कृत में डॉ. अम्बेडकर सम्बन्धी साहित्य की रचना–परम्परा का विश्लेषण करते हुए डॉ. अम्बेडकर के संस्कृत भाषा के विषय में क्या विचार थे, वो जानेंगे।

संस्कृतसाहित्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन चरित को आधार बनाकर विद्वानों ने कई ग्रन्थ लिखे। *संस्कृत में लिखित डॉ. अम्बेडकर सम्बन्धी साहित्य की रचना–परम्परा या समीक्षा' ऐसे विषयों* पर मूलकार्य नहीं हुआ है लेकिन इस विषय पर प्रचुर साहित्य अवश्य उपलब्ध होता है, जिसका संयोजन करने की आवश्यकता है। विद्वानों ने कहा है कि 'साहित्य समाज एवं राष्ट्र का दर्पण होता है।' तदनुसार आधुनिक भारत में अम्बेडकर–साहित्य शुभ, कल्याणकारी, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक चिन्तनयुक्त है। इसलिए वर्तमान में अम्बेडकर–साहित्य की अत्यधिक आवश्यकता है। अत: ऐसे शोध पत्र शोध के अलग–2 क्षेत्रों में बहुत लाभकारी सिद्ध होगा। इस शोधकार्य के माध्यम से साहित्यप्रेमियों एवं विभिन्न शोध–क्षेत्रों में कार्य कर रहे शोधार्थियों को लाभ हो, इस शोधपत्र के माध्यम से यही प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध-**पत्र में** ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध-प्रविधि का सहारा लिया जायेगा।

प्रस्तावित **शोध-पत्र** में संस्कृत–लिखित अम्बेडकर–साहित्य के विभिन्न पक्षों के स्वरूप **को** बताने के क्रम में विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध-प्रविधि का उपयोग किया जायेगा।

तत्पश्चात् आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध-**पत्र** को समझने एवं उसकी समीक्षा करने हेतु समीक्षात्मक शोध-प्रविधि की सहायता ली जायेगी।

---

[4] संस्कृत- भारत की आत्मा तथा विवेक की वाणी, पृ. 4–6

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची (Bibliography)

1. अम्बेडकरदर्शनम्, बलदेवसिंह मेहरा, देवेश पब्लिकेशन्स, अर्बन इस्टेट, रोहतक, 2009
2. भीमरावाम्बेडकरशतकम्, सुगतकविरत्नम् आचार्य शान्तभिक्षुशास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2012
3. भीमशतकम्, कविरत्नं श्रीकृष्णसेमवाल, दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली, 2008
4. भीमायनम्, प्रो. प्रभाशंकर जोशी, झेलम, पत्रकारनगरी, पुणे, 2009-10
5. संस्कृतपुष्पमाला, नागपुर विद्यापीठ प्रकाशन, नागपुर, 1972

द्वितीयक स्त्रोत (Secondary Sources)

1. अज्ञात, डॉ. सुरेन्द्र , बुद्धधम्म, बुद्धिवाद व आंबेडकर, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
2. अनिल, डॉ. नलिनी, डॉ. सहारे, बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की संघर्ष-यात्रा एवं सन्देश, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
3. उपाध्याय, बलदेव, *धर्म और दर्शन,* शारदा मन्दिर, वाराणसी, 1945
4. उपाध्याय, बलदेव, *भारतीय दर्शन,* चौखम्बा ओरियन्टालिया, दिल्ली, 1979
5. उपाध्याय, भरत सिंह, *पालि साहित्य का इतिहास,* इलाहाबाद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 2013
6. उपाध्याय, भरत सिंह, *बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन,* कलकत्ता, बंगाल हिन्दी मण्डल 1954
7. ऋषि, उमाशंकर शर्मा, *सर्वदर्शनसङ्ग्रह,* मध्वाचार्य, वाराणसी,चौखम्बा विद्याभवन, 2006
8. ओझा, भुवनेश्वर नाथ, *भारतीय दर्शन (समकालीन संदर्भ),* सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2013
9. ओलडनवर्ग, एच., *बुद्धा ; हिज लाईफ, हिज डाक्ट्राइन, हिज आर्डर,* सम्पादक- विलयम होये, विलियम एंड नोरगेट पब्लिशर्स, लंदन, 1882
10. कोसाम्बी, धर्मानन्द, *भगवान् बुद्ध जीवन और दर्शन,* दिल्ली, साहित्य अकादमी-लोकभारती पेपरबैक्स, द्वितीय संस्करण, 2009
11. गांगुली, एन., *दा बुद्धा एंड हिज मैसेज,* पापुलर बुक डिपो, बाम्बे, 1957
12. गोभिल, श्री नन्दकिशोर, *भारतीय दर्शन,* डॉ. राधाकृष्णन, प्रथम संस्करण, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1969
13. गौतम, एस.एस., *बुद्धयुगीन भारत,* दिल्ली: गौतम बुक सेन्टर, प्रथम संस्करण, 2009
14. जैन, धर्मचन्द, *बौद्ध-दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त,* बौद्ध अध्ययन केन्द्र, जोधपुर, 2009
15. देव, नरेन्द्र, *बौद्ध धर्म दर्शन,* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1971
16. धर्मरक्षित, भिक्षु, *पालि साहित्य का इतिहास,* वाराणसी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड, प्रथम संस्करण, 1971, पुनर्मुद्रण, संवत 2066
17. नरसु, पी. लक्ष्मी, कौसल्यायन, आनन्द (अनु.), *बौद्ध धर्म का सार,* नागपुर, बुद्धभूमि प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1988

18. बापट, पी.वी., *बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष,* दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, तृतीय संस्करण, 2008
19. भारद्वाज, मनोहर, *फिलोसाफी आफ बुद्धिज्म,* साइबर टैक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2010
20. मिश्रा, महेन्द्र कुमार, *भारतीय दर्शन,* दिव्यम् प्रकाशन, दिल्ली, 2014
21. यादव, पुष्पा, *बुद्ध विचारधारा के विविध आयाम,* साहित्य निलय, कानपुर, 2013
22. राधाकृष्णन, एस., *गौतम बुद्ध (जीवन और दर्शन),* अनु राजेश्वर गुरु, राजपाल एण्ड सन्स पब्लिकेशन, दिल्ली, 2015
23. राम कृष्णन, सर्वपल्ली, *भारतीय दर्शन (भाग-1),* दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स, 2012
24. लाल, अँगने, *बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम,* लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, प्रथम संस्करण, 2008
25. लाल, अँगने, *संस्कृत बौद्ध साहित्य में इतिहास और संस्कृति,* लखनऊः उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, प्रथम संस्करण, 2006
26. शास्री, आचार्य चतुरसेन,*बुद्ध और बौद्ध धर्म,* भारती प्रकाशन, लखनऊ, 1964
27. सांकृत्यायन, राहुल, *दर्शन दिग्दर्शन,* किताब महल प्राइवेट लि, इलाहाबाद, 1961
28. सांकृत्यायन, राहुल, *पालि साहित्य का इतिहास,* लखनऊः हिन्दी समिति ग्रंथमाला-79, हिन्दी समिति, 1973
29. सिंह, विंधाचल, *विसुद्धिमग्ग : शील, समाधि और प्रज्ञा,* विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2009
30. हार्वे, पिटर,*ए इन्ट्रोडक्सन टू बुद्धिज्म,* कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रैस, दिल्ली, 2004
31. Akira, Hirakawa,: A History of Indian Buddhism From Sakyamuni to Early Mahayana, Honolulu, University of Hawaii Press, 1990
32. Allen, George Francis, The Buddha's Philosophy, New York: Macmillan, 1956.
33. Dasgupta, S.N, History of Indian Philosophy (Vol. 1), Delhi: Motilal Banarsidass, 1975.
34. Radhakrishnan, S, History of Indian Philosophy (Vol. 1), London, 1929.
35. Dav, Rhys, *Buddhist India,* London, 1903
36. Davids, T. W. Rhys, *Buddhist India,* London: 1903, Reprint 2010
37. **कोश-ग्रन्थ** (Dictionares &Encyclopedias)
38. Apte, Vaman Shivaram, *The Student's English Sanskrit Dictionary,* Bhartiya Granth Niketan, New Delhi; 2011
39. Helen, Hemingway,), *Encyclopedia Britannica(Vols.-II, VIII, XXI* Publication, Benton, 15th Edition, 1973-74
40. Hestings, James, *Ecyclopedia of Religion and Ethics, Vol. -VIII,* New York, 1980
41. Ram, Munsi, Manohar Lal, *English -Sanskrit Dictionary,* Delhi, 1976

42. Williams, Monier, *A Sanskrit English Dictionary,* Bhartiya Granth Niketan, New Delhi; 2010
43. आप्टे, वामन शिवराम, *संस्कृत-हिन्दी कोश:* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1988
44. आप्टे, वामनशिवराम, *संस्कृत-हिन्दी कोश,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली; 1973
45. कौसल्यायन, भदन्त आनन्द, *पालि-हिन्दी कोश,* सिद्धार्थ बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण,1975
46. पंथ,आर, *पालि-हिन्दी शब्दकोश (प्रथम भाग, तृतीय खण्ड) (उ-ओलारिक),* नव नालन्दा महाविहार, बिहार, प्रथम संस्करण, 2011
47. पंथ,आर, *पालि-हिन्दी शब्दकोश (प्रथम भाग, द्वितीय खण्ड) (इ-ईकारिका),* नव नालन्दा महाविहार, बिहार, प्रथम संस्करण, 2009
48. पंथ,आर, *पालि-हिन्दी शब्दकोश (प्रथम भाग, प्रथम खण्ड) (अ-आकारिका),* नव नालन्दा महाविहार, बिहार, प्रथम संस्करण, 2007
49. भास्कर वर्णेकर, श्रीधर,(सं.) *संस्कृत वाङ्मय कोश,* भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता, 2001

अन्तर्जालीय स्रोत (Internet Sources)

1. http://www.ancient-buddhist-texts.net
2. http://www.jstor.org
3. http://www.paltext.com
4. http://www.tipitak.org